एच0आई0वी0 एवं एड्स के सम्बन्ध में सामान्य भ्रान्तियाँ

नमस्कार मेरा नाम (प्रस्तुतकर्ता का नाम) है। मैं प्रस्तुतकर्ता की भूमिका में हूँ। ''एच0आई0वी0 एवं एड्स के सम्बन्ध में सामान्य भ्रान्तियाँ '' में आपका स्वागत है। यह वीडियो एच0आई0वी0 एवं एड्स के बारे में प्रचलित और गलत सूचनाओं को ठीक करने की कोशिश करेगा। पहले मैं प्रत्येक भ्रान्ति के बारे में बताऊँगा और फिर उससे जुड़ी सच्चाई की व्याख्या करूँगा।

भ्रान्ति : एच0आई0वी0 नामक वायरस है ही नहीं।

सच्चाई : 1989 में ही एच0आई0वी0 नामक वायरस का पता लगाया जा चुका था जो कि लगभग सभी एड्स पीड़ितों में पाया जा सकता है। यह रक्त, वीर्य, योनि द्रव्य और मस्तिष्क उत्तकों सहित कई अन्य उत्तकों एवं द्रव्यों में पाया जा सकता है। चिकित्सकीय परीक्षण के द्वारा रक्त में मौजूद एच0आई0वी0 कणों की गिनती की जा सकती है। एच0आई0वी0 प्रयोगशालाओं में भी उत्पन्न किया जा सकता है। शक्तिशाली सूक्ष्मदर्शियों के द्वारा एच0आई0वी0की तस्वीरें भी ली जा चुकी है। चिकित्सकीय परीक्षण के द्वारा यह भी दिखाया जा सकता है कि मरीज के अन्दर किस प्रकार का एच0आई0वी0 वायरस मौजूद है और डॉक्टर इस सूचना का उपयोग एड्स की दवा चुनने के लिये कर सकते है।

भ्रान्ति : एच0आई0वी0 से एड्स नही होता है।

सच्चाई : सम्पूर्ण विश्व के वैज्ञानिक इस बात पर सहमत हैं कि वह वायरस जिसे हम एच0आई0वी0 कहते हैं, ही उस बीमारी को जन्म देता है, जिसे हम एड्स कहते हैं। वैज्ञानिकों ने यह भी दर्शाया है कि एच0आई0वी0 किस प्रकार से शरीर

को संक्रमित करता है, रोगों से लड़ने की क्षमता को कमजोर करता है तथा एड्स के लक्षणों का कारण बनता है। संक्रमित व्यक्ति के खून में एच0आई0वी0 के स्तर का पता लगाया जा सकता है। वे औषधियां जो एच0आई0वी0 के लगातार बनने की प्रक्रिया को रोकते है, एड्स के लक्षणों को घटा देती है : यदि एच0आई0वी0 एड्स का कारण नहीं होता तो ये दवाईयाँ भी कारगर नही होती। यू0एन0एड्स, विश्व स्वास्थ्य संगठन, संयुक्त राष्ट्र रोग नियंत्रण एवं बचाव केन्द्र और पैसट्यूअर संस्थान, फ्रांस ये सभी संस्थायें इस बात से सहमत है कि एच0आई0वी0 ही एड्स का कारण है।

भ्रान्ति : एच0आई0वी0 परीक्षण प्रायः गलत होते है।

सच्चाई : आज कल होने वाले एच0आई0वी0 परीक्षण बिल्कुल सही होते हैं। जब एक व्यक्ति एच0आई0वी0 का परीक्षण करवाता है और उसका निष्कर्ष एच0आई0वी0 पाजिटिव आता है, तो एक दूसरा अलग प्रकार का परीक्षण इस बात की पुष्टि करने के लिए किया जा सकता है कि वह व्यक्ति वास्तव में एच0आई0वी0 पाजिटिव है। वैज्ञानिक अध्ययन यह दिखाते हैं कि यदि एक व्यक्ति के प्रथम एवं द्वितीय दोनों परीक्षणों का परिणाम एच0आई0वी0 पाजिटिव आता है, तो इन परिणामों के गलत होने की सम्भावना प्रत्येक 2,50,000 (ढाई लाख) व्यक्तियों में से 1 गलत परिणाम की ही होती है। इसका अर्थ यह है कि प्रत्येक 2,50,000 (ढ़ाई लाख) व्यक्तियों जिनका प्रथम एवं द्वितीय परीक्षण का परिणाम एच0आई0वी0 पाजिटिव आता है, केवल एक परीक्षण का परिणाम गलत होगा।

भ्रान्ति : प्रतिबन्धित दवाओं के प्रयोग से एड्स होता है, न कि एच0आई0वी0 से।

सच्चाई : 1980 के शुरूआती दशक में पहली बार डाक्टरों ने एच0आई0वी0 की पहचान की थी। उस समय कुछ शोधकर्ताओं ने यह माना कि प्रतिबन्धित दवाओं का प्रयोग एड्स का कारण हो सकता है परन्तु उसके बाद के अध्ययनों के द्वारा यह पता लगा कि एड्स एच0आई0वी0 से होता है न कि प्रतिबन्धित दवाओं के सेवन से। उदाहरण के लिये 715 समलैंगिक पुरूषों पर किया गया अध्ययन जिसमें एच0आई0वी0 पाजिटिव एवं एच0आई0वी0 निगेटिव दोनो प्रकार के लोग शामिल थे। अध्ययन में शामिल किये गये 365 एच0आई0वी0 पाजिटिव पुरूषों में 136 मे एड्स विकसित हुआ और बाकी बचे 350 एच0आई0वी0 निगेटिव पुरुषों में से एक में भी एड्स विकसित नहीं हुआ, बावजूद इसके कि उनमें से ज्यादातर एच0आई0वी0 निगेटिव पुरूष तमाम तरह की प्रतिबन्धित दवाओं का सेवन करते थे। एच0आई0वी0 पाजिटिव पुरूषों में से 101 की मौत एड्स से सम्बन्धित कारणों से हुई, जबकि एच0आई0वी0 निगेटिव पुरूषों में से किसी की भी मृत्यु इस प्रकार नहीं हुई। अतः यह बात साफ है कि यद्यपि पुरूष एड्स से ग्रसित हुए और उनकी मौत एड्स से हुई, यह इस बात पर निर्भर था कि वह एच0आई0वी0 पाजिटिव थे या नहीं, न कि इस बात पर कि उन्होने प्रतिबन्धित दवाओं का सेवन किया था या नहीं।

कुछ लोगों का कहना है कि एड्स सुईयों के द्वारा दवा लेने से होता है। यह बात सत्य है कि सुईयों के द्वारा दवाई लेने वालो में एड्स होने का जोखिम ज्यादा होता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि एच0आई0वी0 सुईयों का साझा प्रयोग करने से फैलता है, न कि मात्र सुईयों के माध्यम से दवाईयों को सेवन करने से।

अध्ययनों के द्वारा यह दिखाया गया है कि आपकी मौत एड्स के द्वारा होती है या नहीं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप एच0आई0वी0 पाजिटिव है या नहीं न कि इस बात पर कि आपने सुईयों के माध्यम से दवाओं का सेवन किया है। एक अध्ययन में शोधकर्ताओं ने 86 एच0आई0वी0 निगेटिव व्यक्तियों, जिन्होनें औसतन 7.6 (सात दशमलव छः) वर्षो तक सुई के द्वारा दवाओं का सेवन किया था, की तुलना 70 एच0आई0वी0 पाजिटिव व्यक्तियों से किया जिन्होनें औसतन 9. 1 (नौ दशमलव एक) वर्षो तक सुई से दवाओं का सेवन किया था। एच0आई0वी0 पाजिटिव व्यक्तियों में से 25 की मौत एड्स के कारण हुई जबकि एच0आई0वी0 निगेटिव व्यक्तियों में से किसी की भी मौत एड्स से नहीं हुई। सुई के माध्यम से दवाओं का प्रयोग करने वालों में से केवल उन्ही की मौत एड्स से हुई जो एच0आई0वी0 पाजिटिव थे। यह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि एच0आई0वी0 एड्स का कारण है, न कि मात्र सुईयों के माध्यम से दवाओं का सेवन।

भ्रान्ति : एड्स का कारण एड्स से बचाव की दवाईयां ही हैं, न कि एच0आई0वी0।

सच्चाई : एच0आई0वी0 ही एड्स होने का कारण है, एड्स की दवायें नही। इस तरह के बहुत से मामले प्रकाश में आये है जबकि लोगों ने कभी भी एड्स की दवाओं का सेवन नहीं किया पर उनको एड्स हुआ। एड्स की दवाऐं 1980 के दशक के अन्त मे ही उपलब्ध हो पायी। उसके पूर्व किसी की भी चिकित्सा एड्स रोधी दवाओं से नहीं किया गया लेकिन अकेले अमेरीका में ही कई हजार व्यक्ति एच0आई0वी0 से संक्रमित हुए और उनमें एड्स उत्पन्न हुआ। इस महामारी के

प्रारम्भिक दौर में वे व्यक्ति जो रक्त के असुरक्षित आदान–प्रदान के द्वारा एच0आई0वी0 से ग्रसित हुए, उनका इलाज एड्स की रोकथाम वाली दवाओं से कभी नहीं किया गया, बावजूद इसके वे एच0आई0वी0 से संक्रमित हुए और एड्स ग्रसित हो गये। विकासशील देशों मे एड्स की दवाओं के उपलब्ध होने के काफी पहले लाखों लोग एच0आई0वी0 से संक्रमित हुए और एड्स ग्रसित हो गये। वे बच्चे जो कि जन्म के दौरान या स्तनपान के द्वारा एच0आई0वी0 से संक्रमित हुए, उनमें भी एड्स का विकास हुआ, बावजूद इसके कि उनका इलाज एड्स की दवाओं से कभी नही किया गया था। अध्ययन यह बताते है कि यदि व्यक्ति एच0आई0वी0 से संक्रमित है और उनका उपचार समय पर नहीं किया गया तो सामान्यतः उनमें एड्स उत्पन्न हो जाता है। मगर दूसरे अन्य अध्ययन यह बताते है कि एच0आई0वी0 पाजिटिव व्यक्तियों का उपचार एड्स रोधी दवाओं से करने पर एड्स के उत्पन्न होने एवं व्यक्ति की मृत्यु होने के जोखिम को कम किया जा सकता है।

भ्रान्ति : ए0जेड0टी0 नामक एड्स की दवाई फायदे से ज्यादा नुकसान पहुँचाती हैं।

सच्चाई : ए0जेड0टी0 जीवन को बचाता है। ए0जेड0टी0 एड्स की सबसे पहली दवा थी। जब केवल ए0जेड0टी0 ही उपलब्ध था तब रोगियों को इसकी अधिक मात्रा दी जाती थी जिसके परिणामस्वरूप इसके कई विपरीत प्रभाव भी होने लगे। चूंकि सिर्फ इसी दवा का प्रयोग किया जाता था, एच0आई0वी0 ने तुरन्त ही इसकी काट खोज ली जिससे ए0जेड0टी0 कम प्रभावी साबित हुआ। वर्तमान में

रोगियों को एड्स की कई दवाईयाँ एक साथ दी जाती है। एक साथ काम करने से ये दवाईयाँ एक अकेली दवा के मुकाबले ज्यादा बेहतर होती हैं। कुछ दवाओं का प्रयोग, उनके विपरीत प्रभावों को कम करने के लिए, कम मात्रा में किया जा सकता है। लेकिन अध्ययन बताते है कि वर्तमान में उपलब्ध एड्स रोधी दवाओं की उपलब्धता के पहले ए0जेड0टी0 अकेले जीवन रक्षक का काम करती थीं।

भ्रान्ति : आप एड्स की दवाओं के प्रयोग के बिना ज्यादा अच्छा रहते हैं।

भ्रान्ति : एड्स की दवाईयाँ एड्स के उपचार में प्रभावशाली नहीं हैं।

सच्चाई : दूसरी दवाओं की ही तरह एड्स की दवाओं का भी विपरीत असर हो सकता है। कभी–कभी यह विपरीत असर जान–लेवा भी हो सकता है। फिर भी अध्ययनों से पता चला है कि जब रोगी का एच0आई0वी0 रोग उस स्तर तक विकसित हो जाता है जब उसे एड्स की दवाओं से उपचार की आवश्यकता हो तब वह व्यक्ति जिनका उपचार एड्स की दवाओं से किया जाता है, वो उन व्यक्तियों की तुलना में ज्यादा जीवित रहते हैं तथा उनमें एड्स का विकास भी धीमे होता है, जिनका उपचार एड्स की दवाओं से नहीं किया जाता है। यह बात दोहराये जाने योग्य है कि वैज्ञानिक पत्रिकाओं में प्रकाशित अध्ययनों ने यह सिद्ध कर दिया है कि वो एच0आई0वी0 रोगी जिनका उपचार एड्स की दवाओं से किया जाता है वो एड्स की दवाओं से उपचार नहीं किये गये रोगियों की तुलना में ज्यादा जीवित रहते है तथा उनमें एड्स का विकास धीमी गति से होता है।

भ्रान्ति : एड्स की दवाओं की उपलब्धता के कारण हमें एच0आई0वी0/एड्स के बारे में चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं है।

सच्चाई : एड्स की दवाईया एच0आई0वी0 के विरूद्ध लड़ाई मे मद्दगार साबित हुई है परन्तु ये पूर्ण उपचार नहीं है। यदि आपका डाक्टर आपको एड्स की दवाओं का सेवन करने की सलाह देता है तो एड्स की दवाओं का एच0आई0वी0 के विरूद्ध काम बन्द कर देने के जोखिम को कम करने के लिये आपको दवा की प्रत्येक खुराक सही तरीके से लेनी होगी। एड्स की दवाओं का दुःखद विपरीत परिणाम भी हो सकता है। यदि रोगी के शरीर में मौजूद एच0आई0वी0 उपलब्ध सभी एड्सरोधी दवाओं (या उन सभी दवाओं जो रोगी को उपलब्ध हैं)से लड़ने मे सक्षम है तो उस व्यक्ति में दवा लेने के बावजूद एड्स विकसित हो सकता है तथा उसकी मृत्यु भी हो सकती है। प्रतिवर्ष एच0आई0वी0 के बीस लाख नये मामले सामने आ रहे हैं और विश्व स्तर पर एच0आई0वी0 उपचार के लिये खर्च की जानी वाली धनराशि बढ़ती ही जा रही है। इन सभी कारणों से एच0आई0वी0/एड्स अब भी एक गंभीर समस्या है तथा एच0आई0वी0 के फैलाव को रोकना अब भी बहुत महत्वपूर्ण है।

भ्रान्ति : यदि आप पहले से ही एच0आई0वी0 संक्रमित हैं और सेक्स में सक्रिय हैं तो आपको सुरक्षित सम्भोग करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

सच्चाई : एच0आई0वी0 पाजिटिव व्यक्तियों को अपने एच0आई0वी0 निगेटिव सेक्स–पार्टनर को एच0आई0वी0 संक्रमण के जोखिम से बचाने के लिए सुरक्षित सम्भोग करना चाहिए। यदि दोनों पार्टनर एच0आई0वी0 पाजिटिव है तब भी एक पार्टनर को दूसरे पार्टनर में मौजूद भिन्न प्रकार के एच0आई0वी0 जो उसके शरीर मे मौजूद एच0आई0वी0 से अधिक आक्रामक और एड्स की दवाओं से लड़ने में

अधिक सक्षम हो सकता है, से बचने के लिए सुरक्षित सम्भोग करना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति एच0आई0वी0 पाजिटिव है और सम्भोग करता है तो यह जरूरी है कि वह इस बारे में अपने प्रत्येक सेक्स पार्टनर को बताये तथा हर बार सुरक्षित सेक्स ही करें।

भ्रान्ति : आप मुख मैथुन से एच0आई0वी0 संक्रमित नही हो सकते।

सच्चाई : यद्यपि मुख मैथुन के द्वारा एच0आई0वी0 के फैलाव का खतरा दूसरे कुछ अन्य प्रकार के मैथुन की तुलना में कम होता है, परन्तु यह खत्म नहीं होता है। इस प्रकार के मामले सामने आये हैं जबकि व्यक्ति केवल मुख मैथुन ही करते थे और वे एच0आई0वी0 संक्रमित हो गये। इसलिये जो व्यक्ति मुख मैथुन करते हैं वो पुरुष कण्डोम का प्रयोग करके एवं महिलाए डेण्टल डैम कहे जाने वाले चौकोर लेटेक्स का प्रयोग करके एच0आई0वी0 संक्रमण के जोखिम को कम कर सकती हैं।

भ्रान्ति : मात्र एकबार सम्भोग करने से आप एच0आई0वी0 संक्रमित नही हो सकते।

सच्चाई : कुछ ऐसे मामले भी प्रकाश में आये हैं जबकि कुछ लोग मात्र एक बार के सम्भोग से ही एच0आई0वी0 संक्रमित हो गये क्योंकि उनके सहभागी एच0आई0वी0 पाजिटिव थे और उन्होनें कण्डोम का इस्तेमाल नहीं किया था। कोई भी व्यक्ति जो एच0आई0वी0 पाजिटिव है, अपने सेक्स सहभागी को संक्रमित कर सकता है इसलिये यदि आप सेक्स करते है तो याद रखिये कि मात्र एक बार

सेक्स करने से भी आप एच0आई0वी0 से संक्रमित हो सकते है इसलिए कण्डोम का उपयोग जरूरी है।

भ्रान्ति : यदि आप एच0आई0वी0 पाजिटिव है लेकिन आपके खून में मौजूद एच0आई0वी0 की संख्या बहुत कम है मतलब जो रक्त जाँच द्वारा नहीं पहचाने जा सकते, तो आप एच0आई0वी0 नही फैला सकते।

सच्चाई : कोई भी व्यक्ति जो एच0आई0वी0 पाजिटिव है वह अपने सेक्स पार्टनर को एच0आई0वी0 दे सकता है। यह सच है कि आपके रक्त में मौजूद एच0आई0वी0 की मात्रा कम होने पर, आपके द्वारा इसके फैलने का खतरा भी कम होता है, परन्तु यह जोखिम खत्म नहीं होता है। यदि आप एच0आई0वी0 पाजिटिव है और सेक्स करते है, तो इस बात से कोई फर्क नही पड़ता कि आप कितने स्वस्थ है या आपके रक्त में मौजूद एच0आई0वी0 की मात्रा कितनी कम है, आपको अपने सेक्स पार्टनर को इस बारे में जरूर बताना चाहिए ताकि वह इसे जान सके और आप एकसाथ मिलकर एच0आई0वी0 के फैलने के जोखिम को कम कर सकें।

भ्रान्ति : एड्स चूमने, गले मिलने या हाथ मिलाने से फैल सकता है।

सच्चाई : सामान्यतः एड्स चार प्रकार से फैलता हैः सेक्स करने से, सुईयों द्वारा दवाओं के सेवन के समय उनके आदान प्रदान से, रक्त चढ़ाने से और माता से शिशु में जन्म के दौरान या स्तनपान के दौरान। मात्र किसी को चूमने, गले लगाने या हाथ मिलाने से आप एच0आई0वी0 से संक्रमित नहीं हो सकते। किसी के साथ काम करने या रहने से भी आप एच0आई0वी0 से संक्रमित नहीं होते।

भ्रान्ति : यदि आपको एच0आई0वी0 है तो किसी ऐसे व्यक्ति के साथ सम्भोग करके जिसने पहले कभी सेक्स न किया हो, आप एच0आई0वी0 मुक्त हो जायेंगे।

सच्चाई : मौजूदा समय में एच0आई0वी0/एड्स का कोई उपचार नही है। यह भ्रान्ति अफ्रीका के कई भागों में प्रचलित है कि ऐसे व्यक्ति जिन्होनें कभी सेक्स नहीं किया हो, उनके साथ सेक्स करने से आप एच0आई0वी0/एड्स मुक्त हो सकते है। इसी भ्रान्ति की वजह से एच0आई0वी0 पाजिटिव पुरुषों ने, इस आशा के साथ कि वो एच0आई0वी0 मुक्त हो सकते है, ऐसी नवयुवतियों एवं लड़कियों का बलात्कार किया जिन्होनें पहले कभी सेक्स नहीं किया था।

भ्रान्ति : प्रत्येक एच0आई0वी0 संक्रमित व्यक्ति में अन्ततः एड्स उत्पन्न हो जाता है।

सच्चाई : कुछ व्यक्तियों में एड्स नही उत्पन्न हुआ जबकि वे बीस वर्षों से भी अधिक समय से एच0आई0वी0 पाजिटिव थे। ऐसा लगता है जैसे उनके शरीर में बिना दवा के एच0आई0वी0 से लड़ने की क्षमता थी। कुछ अन्य लोगो में कमजोर एच0आई0वी0 के लक्षण पाये गये। कुछ अन्य लोगो ने सम्बन्धित दवाईया लेनी शुरू की ताकि उनके शरीर में एच0आई0वी0 से लड़ने की क्षमता कम न होने पाये और इस प्रकार उनमें एड्स विकसित ही नहीं हुआ। यह मात्र समय पर निर्भर करता है कि व्यक्ति कितनी लम्बे समय तक एच0आई0वी0 पाजिटिव रहते हुए, एड्स से बचा रह सकता है।

भ्रान्ति : मानव ने एच0आई0वी0 को उत्पन्न किया।

सच्चाई : विभिन्न प्रकार के एच0आई0वी0 का अध्ययन करने के बाद वैज्ञानिकों ने बताया कि किस प्रकार एच0आई0वी0 का विकास हुआ। वैज्ञानिक अध्ययन बताते है कि एच0आई0वी0– 1 की उत्पत्ति मानव मे चिम्पैन्जी में पाये जाने वाले एक मिलते जुलते वायरस से हुआ और एच0आई0वी0–2 बन्दर में पाये जाने वाले एक मिलते जुलते वायरस से मनुष्य में आया। एक अन्य प्रकार के शोध से यह पता चलता है कि एच0आई0वी0–1 1931 के आस पास विकसित हुआ।

यह सब एच0आई0वी0 एवं एड्स के बारे में सामान्य प्रचलित भ्रान्तियां है। इस प्रकार की कई और भ्रान्तियां भी प्रचलित है। इस प्रकार की भ्रान्तियां बहुत नुकसानदायक होती हैं क्योंकि ये लोगों के अन्दर एच0आई0वी0, एड्स के विकास में इसका योगदान तथा एच0आई0वी0/एड्स के उपचार के बारे में लोगो को संशय में डाल देती है। यह सुनिश्चित करें कि आपको एच0आई0वी0 एवं एड्स के बारे में सही जानकारी प्राप्त हो। अफवाहों, भ्रान्तियों, अप्रमाणित तथ्यों या इण्टरनेट पर उपलब्ध वीडियो और वेब पेज पर विश्वास न करें। यदि आपके पास कोई भी सवाल है तो डॉक्टर से सम्पर्क करें। एच0आई0वी0 एड्स का कारण है। एच0आई0वी0 परीक्षण इस बात का सही तरीके से पता लगा सकते है कि आप एच0आई0वी0 संक्रमित है या नहीं। एड्स की दवाए एच0आई0वी0/एड्स के उपचार के लिये कारगर तथा जीवन रक्षक है। एच0आई0वी0 कैसे फैलता ह? इस बात की सही जानकारी जीवन एवं मृत्यु के बीच अन्तर कर सकती है। आप कोई भी हो, आप एक महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं, आपका जीवन भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना की आप के समाज मे रह रहे दूसरे लोगो का। अपना और अपनों का

ख्याल रखिये। अच्छे निर्णय लीजिए जो आपके एच0आई0वी0 संक्रमित होने के जोखिम को कम कर सकें।

एड्सविडियोंज.आर्ग के लिये मैं (प्रस्तुकर्ता का नाम)।